मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

मंत्रियों की पिकनिक पर कर्मचारियों की छुट्टी कुर्बान 2
आम आदमी पार्टी ने करनाल से की मोदी हटाओ- देश बचाओ पोस्टर अभियान की शुरुआत 4
जुनैद-नासिर हत्याकांड की निष्पक्ष जांच को लेकर सेमिनार 5
गांधी और उनकी डिग्री के बारे में मनोज सिन्हा ने क्या कहा, सच क्या है? 6
खनन मंत्री के जिले में अरबों रुपये का अवैध खनन, कार्रवाई शून्य 8

वर्ष 37 | अंक 21 | फरीदाबाद | 2-8 अप्रैल 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मंत्रियों की नौटंकी जारी है

नये भवन की घोषणा, दो कमरों का काटा फीता

फरीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) बीते रविवार 26 मार्च को केन्द्रीय श्रम मंत्री भूपेन्द्र सिंह यादव ने एनएच तीन स्थित ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल का दौरा किया। इस अवसर पर स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय राज्यमंत्री केपी गूजर, स्थानीय विधायक सीमा त्रिखा जिला भाजपा अध्यक्ष गोपाल शर्मा के अलावा इनके कई लगुए-भगुए भी मौजूद रहे। उद्देश्य जनता को यह संदेश देना था कि भाजपा सरकार इस संस्थान के माध्यम से उनके लिये कितनी भारी सेवा कर रही है। इसकी पुष्टि उस सरकारी प्रेसनोट से होती है जिसमें कहा गया है कि मंत्री केपी गूजर की मांग पर अस्पताल का विस्तार करके 500 बेड की नई इमारत बनाई जाए जिसे श्रममंत्री भूपेन्द्र यादव ने स्वीकार कर लिया।

प्रेसनोट में यह भी कहा गया है कि अस्पताल के इस विस्तार के लिये प्रस्ताव बना कर स्वीकृति हेतु सरकार को भेजा जायेगा। यह कथन पूर्णतया निराधार एवं गलत है। विदित है कि ईएसआई कार्पोरेशन एक स्वायत्त संस्थान है। इसे किसी भी काम के लिये सरकार से न तो कोई पैसा लेना होता है और न ही किसी प्रकार की स्वीकृति। कार्पोरेशन पूर्णतया मज़दूरों के वेतन से वसूले गये अंशदान से चलता है। इसमें किसी भी सरकार का कोई पैसा नहीं लगता, बल्कि इसके सर पर बैठे तमाम मंत्री-संत्री व अफ़सरों का सारा खर्चा भी इसी पैसे से किया जाता है।

मंत्रियों द्वारा नारियल फोड़ने व फीता काटने की कुप्रथा का पालन करते हुए श्रम मंत्री यादव ने उन दो कमरों का भी फीता काटा जिनमें पहले से ही कैंसर मरीजों का इलाज होता आ रहा है। विदित है कि इस अस्पताल में बीते करीब एक साल से बोन मैरो ट्रांसपलांटेशन का काम होता आ रहा है। अब तक 27 मरीजों का सफल बीएमटी किया जा चुका है। यदि उक्त दो कमरों की जगह और अधिक कमरे तथा पर्याप्त स्टाफ़ इस काम के लिये उपलब्ध कराये गये होते तो उपचारित मरीजों की संख्या और भी अधिक हो सकती थी। इस उपचार के लिये चेन्नइ सहित देश के विभिन्न भागों से मरीज सफल इलाज करा कर जा चुके हैं। इसके अलावा प्रतीक्षा सूची काफी लम्बी है। बीएमटी के अलावा भी अन्य श्रेणियों के कैंसर मरीजों का, स्टाफ के भयंकर कमी के बावजूद यहां सफल इलाज हो रहा है।

कैथलैब बीते 14 महीने से यहां कार्यरत

संबंधित खबरें पेज दो पर

मरीजों के लिए नहीं वोटों के लिए बनाया गया मेवला महाराजपुर का अस्पताल

हाईकोर्ट के जज की पत्नी बनीं एसएमओ, बैठेंगी हरियाणा भवन में, न स्टॉफ, न दवा-उपकरण

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) मेवला महाराजपुर में 26 मार्च को 'शुरू हुआ' 46 बेड का शहरी स्वास्थ्य केंद्र मरीजों के इलाज के लिए नहीं, बल्कि रसूखदार डॉक्टरों को फरीदाबाद में तैनाती देने के लिए बनाया गया है। एसएमओ का पद हाईकोर्ट के जज की पत्नी को सौंप दिया गया है जो सेलरी तो यहां से उठाएंगी लेकिन सेवाएं हरियाणा भवन दिल्ली में बैठेगी। इसी तरह डेंटिस्ट, गायनेकोलॉजिस्ट और जनरल फिजीशियन के पद भी रसूखदार लोगों के चहेतों को दिए जा रहे हैं। रही बात जनता की तो उसे इलाज क्या मिलेगा इससे समझा जा सकता है कि सीएचसी में न तो दवा है, न लैब टेक्नीशियन और न नर्सिंग स्टाफ।

छोटे काम का बड़ा ढिंढोरा पीटने वाली भाजपा सरकार के केंद्रीय राज्यमंत्री क़ृष्णपाल गूजर ने करोड़ों रुपये की लागत से बनकर तैयार हुए मेवला महाराजपुर यूएचसी का 26 मार्च को धूमधाम से लोकार्पण किया। इस दौरान उन्होंने भाजपा

शासन के नौ वर्ष में हुए विकास कार्यों की तुलना बीते चालीस वर्षों से करते हुए बड़ी बड़ी बातें कीं। यूएचसी से आम लोगों को फायदा होने की डींगें भी हांकीं। सच्चाई यह है कि यूएचसी में मरीजों का इलाज नहीं हो रहा। कारण, अभी तक यहां दवाएं नहीं हैं। फार्मेसिस्ट और लैब टेक्नीशियन के पद खाली हैं। 46 बेड पर मरीजों की देखभाल के लिए जरूरी 15 नर्सिंग स्टाफ भी जांच, दवाएं नहीं होने के कारण बेकार साबित हो रहा है। स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों के मुताबिक इस यूएचसी की स्थापना मरीजों के इलाज के लिए नहीं बल्कि फरीदाबाद में पोस्टिंग लेकर मजा काटने वाले रसूखदार चिकित्सा कर्मियों को सुविधा देने के लिए हुई है।

शायद यही वजह है कि यहां एसएमओ पद पर डॉ. सरला गुप्ता को ज्वाइन करवाया गया और तुरंत ही डेप्यूटेशन पर उन्हें हरियाणा भवन दिल्ली भेज दिया गया। हाईकोर्ट के जज की पत्नी डॉ. सरला गुप्ता तनख्वाह तो यहां से उठाएंगी और रहेगी दिल्ली में, जहां करने को कोई काम नहीं है। दो मेडिकल ऑफिसर और डेंटिस्ट की पोस्ट पर भी राजनेताओं के करीबियों ने कब्जा जमा लिया है।

राजनैतिक संरक्षण के कारण सीट पाने वाले यह चिकित्सक आम आदमी का इलाज तो क्या ही करेंगे। फार्मासिस्ट, दवा, लैब टेक्नीशियन न होने का बहाना बना कर मरीजों को लौटा दिया जाएगा। जो क़ृष्णपाल गूजर ईएसआई मेडिकल कॉलेज में 500 बेड का अतिरिक्त अस्पताल बनाने की मांग कर सकते हैं तो इस अस्पताल को अच्छे से चलाने की व्यवस्था क्यों नहीं कराते ?

इससे भी बड़ी बात यह कि सरकार पहले से मौजूद सीएचसी पीएचसी में स्टाफ और स्वास्थ्य सेवाएं तो पूरी तरह से दे नहीं पा रही है, वाहवाही और इमारत निर्माण में कमीशन लूटने के लिए लगातार नए सीएचसी-पीएचसी बनाए जा रहे हैं। मेवला महाराजपुर का नया 46 बेड का यूएचसी भी इसका उदाहरण है।